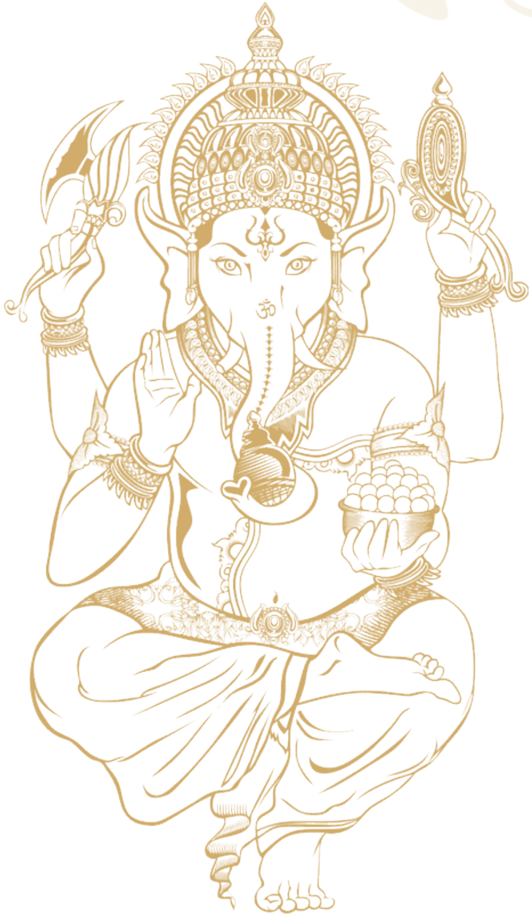

Mr.

21 Feb 1988

09:40 AM

Delhi

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121928701

तिथि 21/02/1988 **समय** 09:40:00 **वार** रविवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:41:32
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	19:20:07 घं	गण	देव
वेलान्तर	00:13:47 घं	योनि	गज
सूर्योदय	06:55:19 घं	नाड़ी	अन्त्य
सूर्यास्त	18:14:46 घं	वर्ण	विप्र
चैत्रादि संवत	2044	वश्य	जलचर
शक संवत	1909	वर्ग	सिंह
मास	फाल्गुन	युँजा	पूर्व
पक्ष	शुक्ल	हंसक	जल
तिथि	5	जन्म नामाक्षर	चा-चाणक्य
नक्षत्र	रेवती	पाया(रा.-न.)	लौह-स्वर्ण
योग	शुभ	होरा	बुध
करण	बव	चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी		योगिनी	
बुध 4वर्ष 4मा 15दि		उल्का 1वर्ष 6मा 16दि	
चन्द्र		सिद्धा	
07/07/2025		07/09/2025	
08/07/2035		07/09/2032	
चन्द्र	08/05/2026	सिद्धा	17/01/2027
मंगल	07/12/2026	संकटा	07/08/2028
राहु	06/06/2028	मंगला	17/10/2028
गुरु	06/10/2029	पिंगला	08/03/2029
शनि	08/05/2031	धान्या	07/10/2029
बुध	06/10/2032	भ्रामरी	18/07/2030
केतु	07/05/2033	भद्रिका	09/07/2031
शुक्र	06/01/2035	उल्का	07/09/2032
सूर्य	08/07/2035		

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			04:17:41	मेष	अश्विनी	2	केतु	चंद्र	---	0:00			
सूर्य			08:03:19	कुंभ	शतभिषा	1	राहु	राहु	शत्रु राशि	1.57	मातृ	पितृ	वध
चंद्र			26:34:07	मीन	रेवती	3	बुध	गुरु	सम राशि	1.09	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल			05:27:49	धनु	मूल	2	केतु	मंगल	मित्र राशि	1.11	ज्ञाति	भ्रातृ	सम्पत
बुध	व		19:22:22	मक	श्रवण	3	चंद्र	बुध	सम राशि	1.44	भ्रातृ	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु			03:03:37	मेष	अश्विनी	1	केतु	सूर्य	मित्र राशि	1.27	कलत्र	धन	सम्पत
शुक्र			19:59:19	मीन	रेवती	1	बुध	शुक्र	उच्च राशि	1.13	अमात्य	कलत्र	जन्म
शनि			06:52:58	धनु	मूल	3	केतु	राहु	सम राशि	1.39	पुत्र	आयु	सम्पत
राहु			29:29:56	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	चंद्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु			29:29:56	सिंह	उ०फाल्गुनी	1	सूर्य	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

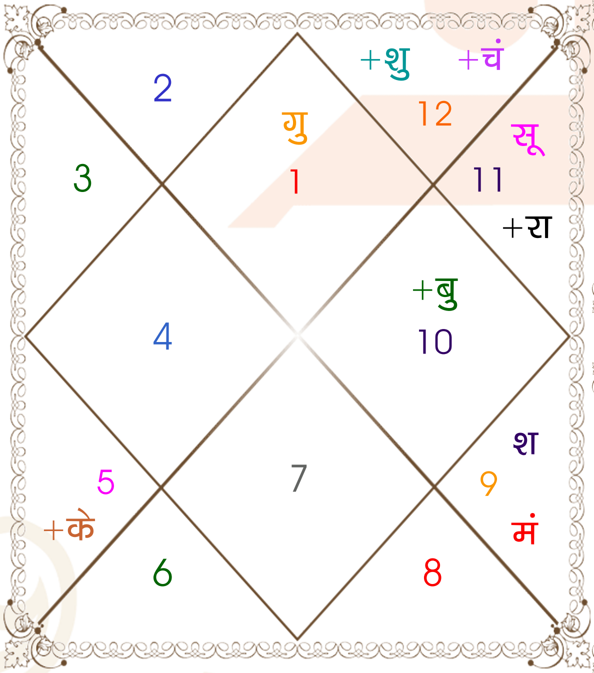

चन्द्र कुंडली

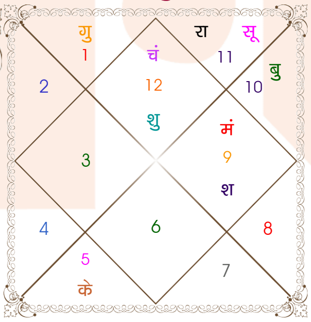

नवमांश कुंडली

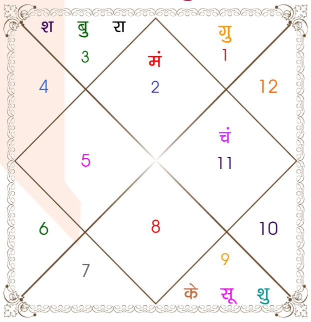

सर्वाष्टकवर्ग

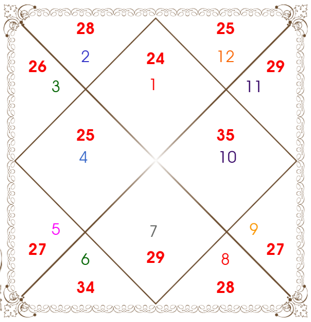

दशमांश कुंडली

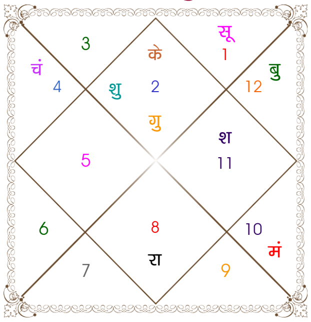

शर्मा डा.जगदीश
नव्यव्याकरणाचार्य एम.ए एम.फिल् पी- एच.डी. यू.जी.सी. स्कॉलर
7018169448
jagdish0069@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, गण देव, नाड़ी अन्त्य, योनि गज तथा वर्ग मेष होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "च" या "चा" अक्षर से होगा। यथा चन्द्रप्रकाश, चन्दन सिंह आदि

आप नैसर्गिक रूप से सज्जनता के सद्गुणों से युक्त रहेंगे एवं अन्य सामाजिक जनों से आपका व्यक्तिगत व्यवहार मधुर एवं मैत्रीपूर्ण रहेगा। धनैश्वर्य से आप परिपूर्ण रहेंगे एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन में इसका उपयोग करेंगे तथा मन पर आप नियंत्रण रखेंगे तथा संयमशील जीवन व्यतीत करेंगे। इससे आप मानसिक रूप से सदैव स्वस्थ रहेंगे। साथ ही आप ईमानदारी से अपना जीवन निर्वाह करने के लिए तत्पर रहेंगे तथा व्यापारादि में भी शुद्ध मन से लाभार्जन करेंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीक्ष्ण रहेगी जिससे आपके अधिकांश कार्य बुद्धिबल से सम्पन्न होंगे।

चारुशीलविभवो जितेन्द्रियः सद्धनानुभवनैकमानसः।
मानवो ननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वभाव वाला, ऐश्वर्य युक्त, जितेन्द्रिय, नेक नीयत से द्रव्य लाभ करने वाला तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है।

आप सम्पूर्ण एवं सुन्दर शरीर अंगों से हमेशा पूर्ण रहेंगे तथा समाज में सभी वर्गो के मध्य पर्याप्त लोकप्रियता अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे। आप वीरता एवं शौर्यचित गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा साहसिक कार्यो को करने के लिए सर्वदा उद्यत रहेंगे। आप का मन स्वच्छ रहेगा तथा सभी सामाजिक लोगों के प्रति आप स्नेह तथा प्रेम का भाव प्रदर्शित करते रहेंगे। इसके साथ ही आप एक धनाढ्य पुरुष के रूप में भी समाज में ख्याति अर्जित कर सकेंगे।

सम्पूर्णाङ्गः सुभगः शूरः शुचिरर्थवान्पौष्णे।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला जातक शारीरिक अंगो से पूर्ण सम्पन्न, सर्वसमाजप्रिय, रणप्रिय, हृदय से शुद्ध एवं धन से सुसम्पन्न होता है।

आप अपने अधिकांश कार्यो को कुशलतापूर्वक सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। साथ ही अन्य जनों से आप शालीनता का व्यवहार करेंगे। आप एक उच्चकोटि के विद्वान होंगे तथा नाना प्रकार के शास्त्रों का आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा। इससे समाज में आप एक प्रतिष्ठित तथा श्रद्धायोग्य पुरुष रहेंगे। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के वैभव तथा धन सम्पति से आप युक्त रहेंगे एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

शर्मा डा.जगदीश
नव्यव्याकरणाचार्य एम.ए एम.फिल् पी- एच.डी. यू.जी.सी. स्कॉलर
7018169448
jagdish0069@gmail.com

सम्पूर्णाङ्गः शुचिर्दक्षः साधुः शूरो विचक्षणः।
रेवती सम्भवे लोके धनधान्यैरलंकृतः।।
मानसागरी

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सब अंगों से पूर्ण, पवित्र, कार्यों में दक्ष, साधु, शूरवीर, पंडित एवं धन धान्यों से सर्वथा अलंकृत रहता है।

आप में कामभावना की प्रवलता रहेगी अतः समय समय पर आप इससे व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। साथ ही आपके जानुभाग में किसी भी प्रकार का कोई निशान या चिन्ह रहेगा। आप सुन्दर स्वरूप से युक्त होंगे एवं मंत्रणा करने या सलाह देने के कार्य में निपुण रहेंगे। इससे अन्य लोग आपसे पूर्ण प्रभावित रहेंगे। आप सुन्दर स्त्री एवं गुणवान पुत्रों से सुशोभित दौरान आपकी- मित्र भी शिक्षित एवं सद्गुणों से युक्त रहेंगे। आप दृढ़विचारों के व्यक्ति होंगे तथा अपने कार्यों को दृढतापूर्वक सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त आप के पास स्थिर रूप से धन सम्पत्ति भी विद्यमान रहेगी तथा आप सदैव सुखी रहेंगे।

रेवत्या मुरूलांच्छनोपगतनुः कामातुरः सुन्दरो।
मंत्री पुत्रकलत्रमित्रसहितो जातः स्थिरः श्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य जाघों में चिन्ह वाला, कामातुर, सुन्दर, मंत्री या सलाह देने वाला, दृढ़, श्रीयुत, स्त्री, पुत्र तथा मित्रों से युक्त होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी दुःखी, धन एवं सुख संसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करते है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा दान देने के लिए सदैव उद्यत रहेंगे। आप एक गुणवान पुरूष होंगे तथा अपने सद्गुणों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। आप शुभ कार्यों पर अधिक व्यय करेंगे। अनावश्यक या अन्य अशुभ कार्यों पर व्यय करना आपको अच्छा नहीं लगेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक एवं विलासमय सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। इन्ही विलासमय वस्तुओं पर आपका व्ययाधिक होता रहेगा।

मीन राशि में उत्पन्न होने के कारण आप शरीर से आकर्षक तथा सुन्दरता से युक्त रहेंगे। आपका ललाट विशाल तथा नासिका उन्नत रहेगी। आपके नेत्र भी सुन्दर होंगे एवं शरीर के सभी अंग पुष्ट एवं सुडौल रहेंगे। आपकी कमर भी पतली होगी। चित्रकारी या शिल्प विद्या में आपका स्वाभाविक आकर्षण रहेगा तथा इस क्षेत्र में आपको परिश्रमपूर्वक ख्याति एवं सफलता अर्जित हो सकेगी। आपके दुश्मन आपसे प्रायः पराजित तथा भयभीत रहेंगे एवं आपका विरोध करने में सामान्यतया असमर्थ रहेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा कई शास्त्रों का आपको

शर्मा डा.जगदीश
नव्यव्याकरणाचार्य एम.ए एम.फिल् पी- एच.डी. यू.जी.सी. स्कॉलर
7018169448
jagdish0069@gmail.com

विस्तृत ज्ञान रहेगा। इससे समाज में आप पूर्ण मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगे। संगीत के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा तथा निष्ठा रहेगी तथा नियमपूर्वक इसके ज्ञानार्जन में तत्पर रहेंगे। आप एक धार्मिक व्यक्ति भी होंगे तथा धार्मिक क्रियाओं का अनुपालन करते रहेंगे। स्त्री वर्ग में आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा कई लोगों से आपके मित्रतापूर्ण संबंध भी रहेंगे। आपकी वाणी प्रिय एवं मधुरता के गुण से युक्त रहेंगी जिससे लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। जीवन में आप समस्त सुखसाधनों को प्राप्त करंगे एवं इनका उपभोग भी करेंगे। आप में क्रोध की अल्पता रहेगी एवं सरकारी सेवा में भी आप तत्पर रहेंगे। जमीन के अन्दर से निकाले गये द्रव्यों के द्वारा आप मनोवांछित धनार्जन करने में सफल रहेंगे। लेकिन आप स्त्री से हमेशा पराजित रहेंगे एवं सभी सांसारिक महत्व के कार्य उसी के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे। आपका स्वभाव भी विनम्र रहेगा तथा अन्य जनों से आपके मधुर संबंध रहेंगे। साथ ही समुद्री जहाज में यात्रा करने या नाव आदि में सैर करने से आप अत्यन्त ही प्रसन्न होंगे एवं इससे पूर्ण आत्मिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त दानशीलता की भावना से आप युक्त रहेंगे तथा यथासमय इस प्रवृति का अनुपालन एवं प्रदर्शन करते रहेंगे।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोऽहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारूदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आपको समुद्र या जलोत्पन्न द्रव्य अथवा शंख मोती आदि रत्नो से पूर्ण लाभ होगा तथा इससे आप सुसम्पन्न भी रह सकते हैं। साथ ही जीवन में आपको किसी अन्य व्यक्ति मित्र या संबंधी की धन सम्पति भी प्राप्त हो सकेगी जिसका आप प्रसन्नतापूर्वक जीवन में उपभोग भी करेंगे। स्त्रियोचित वस्त्रों के प्रति भी आपके मन में अनुरक्ति रहेगी। साथ ही आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा।

जलपरधनभोक्ता दारवासोऽनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारूदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

जल पीने की आपको बार बार इच्छा होगी तथा इसका आप अधिक मात्रा में उपयोग करेंगे। आप अपनी पत्नी के ऊपर पूर्ण विश्वास रखेंगे तथा उससे हमेशा प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे इससे आपका गृहस्थ जीवन हमेशा सुखी एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा। आप में कृतज्ञता का सद्गुण भी रहेगा एवं अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर आप उनको पूर्ण रूप से कृतज्ञता प्रकट करेंगे। साथ ही आप के सद्गुणों से सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक भाग्यशाली पुरूष होंगे एवं भाग्यबल से ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता प्राप्त करेंगे।

शर्मा डा.जगदीश
नव्यव्याकरणाचार्य एम.ए एम.फिल् पी- एच.डी. यू.जी.सी. स्कॉलर
7018169448
jagdish0069@gmail.com

अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्वान्कृतज्ञो ऴमिभवत्यऴमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोऴन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आप एक संयमी पुरुष होंगे तथा इन्द्रियों पर पूर्ण रूप से नियंत्रण रखने में सफल रहेंगे। आपके सभी कार्य चतुराई एवं बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे जिससे अन्य जन आपकी बुद्धिमता एवं चतुराई से प्रभावित रहेंगे। जल क्रीड़ा के प्रति आप विशेष रूचि रखेंगे तथा समय समय पर अपनी इस प्रवृति का पालन भी करते रहेंगे। आप की बुद्धि निर्मल रहेगी एवं अन्य जनों से आपका व्यवहार सादगीपूर्ण रहेगा तथा उनमें छलकपट का सर्वथा अभाव रहेगा। शारीरिक दुर्बलता की भी आपको कभी कभी अनुभूति होती रहेगी।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

जीवन में आप उदरपोषण के कार्यों में प्रायः व्यस्त रहेंगे। साथ ही यदा कदा लाभमार्ग अवरुद्ध होने के कारण आपको आर्थिक परेशानी का भी सामना करना पड़ेगा। आप कान्तिमान शरीर से युक्त रहेंगे एवं इससे आपके सौन्दर्य में नित्य वृद्धि होगी। पिता से आपको पूर्ण धन सम्पति प्राप्त होगी एवं जीवन में इसका आप सुखपूर्वक उपभोग भी करेंगे। साहसी एवं परिश्रम संबंधी कार्यों को करने में भी आप उद्यत रहेंगे। साथ ही आपका स्वभाव भी सन्तोषी रहेगा एवं जो कुछ भी यथाशक्ति उपलब्ध हो सके उससे ही सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोऴप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो ऽध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारुकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आपका स्वभाव गम्भीर रहेगा तथा शौर्योचित गुणों से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे। आप समाज में एक प्रतिष्ठित तथा प्रभावशाली व्यक्ति समझे जाएंगे तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आप कंजूसी की वृति से भी युक्त रहेंगे तथा धन संचय के प्रति आपकी विशेष रूचि रहेगी। फलतः आपके सहयोगी यदा कदा आपसे परेशानी का अनुभव करेंगे। अपने कुल या परिवार में आप सर्वप्रिय रहेंगे एवं सभी कुटुम्बी जन आपको यथोचित स्नेह तथा आदर प्रदान करेंगे। सेवा कार्यों को करने में आप की रूचि रहेगी एवं नित्य इनको सम्पन्न करने में भी तत्पर रहेंगे। आप धीमी गति से चलना पसन्द नही करेंगे। अतः तीव्र गति से चलना आपकी प्रवृति रहेगी। आप सुन्दर आचरण से युक्त रहेंगे जो अन्य जनों के लिए अनुकरणीय तथा प्रशंसनीय रहेगा। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग में आप विशेष प्रिय रहेंगे।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।

शर्मा डा.जगदीश
नव्यव्याकरणाचार्य एम.ए एम.फिल् पी- एच.डी. यू.जी.सी. स्कॉलर
7018169448
jagdish0069@gmail.com

कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

इस प्रकार अपने आकर्षक स्वरूप व्यक्तित्व तथा विद्धता से आप समाज में प्रभावशाली व्यक्ति होंगे एवं अन्य कई लोगों से मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध स्थापित करेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने में सफल रहेंगे।

मीनस्थे मृगलात्रछने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त मधुर एवं श्रेष्ठ रहेगी। जिससे अन्य लोग आपसे प्रायः प्रसन्न रहेंगे। आपकी बुद्धि सरलता के गुण से युक्त होगी एवं सब कुछ सादगी से व्यक्त करना तथा ग्रहण करना आपके व्यक्तित्व की मुख्य विशेषता रहेगी। साथ ही थोड़ी मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करना आपको अत्यन्त ही रुचिकर लगेगा एवं इसके लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। दूसरे लोगों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा भले बुरे की पहचान करने में भी आप सक्षम रहेंगे। साथ ही स्वयं भी आप श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा प्रतिपादित सद्‌गुणों से सुशोभित रहेंगे एवं सर्वप्रकार के ऐश्वर्य से सम्पन्न रहकर जीवन में सुखानुभूति प्राप्त करेंगे।

आपका शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय रहेगा तथा दानशीलता की भावना भी आपके अर्न्तमन में विद्यमान रहेगी जिसका आप समय समय पर यथाशक्ति अनुपालन भी करते रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा सर्वदा सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। अनावश्यक भौतिकता की आप प्रायः उपेक्षा ही करेंगे। इसके अतिरिक्त समाज में उच्चकोटि के विद्वान के रूप में भी आपका आदर तथा सम्मान रहेगा।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

गज योनि में जन्म होने के कारण आप राजप्रिय रहेंगे अर्थात् बड़े बड़े अधिकारी तथा अन्य लोगों से आपके मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे एवं इनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होता रहेगा। आप एक बलशाली पुरूष भी होंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को अपने बल से ही सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। जीवन में आप आवश्यक भौतिक सुखसंसाधनो से युक्त रहेंगे एवं आनन्दपूर्वक उनका उपभोग करेंगे। आप किसी उच्चाधिकारी के सहयोगी या स्वयं भी

कोई उच्चाधिकार प्राप्त पद को प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। आप उत्साह से हमेशा परिपूर्ण रहेंगे तथा कई महत्वपूर्ण कार्यों को अपने इस उत्साह से ही सिद्ध करने में सफलता प्राप्त करेंगे।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे

शर्मा डा.जगदीश
नव्यव्याकरणाचार्य एम.ए एम.फिल् पी- एच.डी. यू.जी.सी. स्कॉलर
7018169448
jagdish0069@gmail.com

वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी तथा पौर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियो आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को आरम्भ न करें। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही शुक्रवार चतुर्थ प्रहर एवं कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की श्रद्धापूर्वक आराधना करनी चाहिए तथा वृहस्पतिवार के नियमित रूप से उपवास रखने चाहिए। साथ ही पीत पुखराज, पीत वस्त्र, पीत चन्दन, पीत पुष्प, हल्दी तथा चने की दाल आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपकी चिन्ताएं दूर होगी एवं स्वास्थ्य में भी सुधार होगा साथ ही अशुभ फलों का प्रभाव समाप्त होकर सर्वत्र शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

शर्मा डा.जगदीश
नव्यव्याकरणाचार्य एम.ए एम.फिल् पी- एच.डी. यू.जी.सी. स्का ॅलर
7018169448
jagdish0069@gmail.com